महिलाएं पुरुषों से अधिक क्यों जीती हैं?

नरेन्द्र देवांगन

अगर आप अमरीका के समस्त नागरिकों का एक विशाल ग्रुप फोटो ले सकें, तो उसमें महिलाओं की संख्या पुरुषों से 60 लाख अधिक होगी। वहां महिलाएं पुरुषों से औसतन सात वर्ष अधिक जीवित रहती हैं। आधुनिक विश्व में संस्कृतियां, आहार, जीवन शैली तथा मृत्यु के कारण भिन्न हैं, लेकिन एक बात समान है - महिलाएं पुरुष से अधिक जीती हैं।

यह प्रक्रिया जन्म से पहले शुरू हो जाती है। गर्भधारण के समय यदि मादा भ्रूणों की संख्या 100 होती है तो नर भ्रूण संख्या 110 होते हैं, जन्म के समय यह अनुपात 100 लड़कियों पर 105 लड़कों तक गिर जाता है। 30 वर्ष की आयु तक महिलाओं और पुरुषों की संख्या लगभग बराबर हो जाती है। इसके बाद महिलाएं बढ़त बनाना शुरू कर देती हैं। 80 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं की संख्या पुरुषों से लगभग दुगनी है।

संक्रामक रोग विज्ञानी डेबोरा विंगार्ड कहती हैं, "आप मृत्यु के दस या बारह मुख्य कारणों पर विचार करें, हर रोग पुरुषों को अधिक मारता है।" वे धीरे-धीरे एक के बाद एक पुरुषों के लिए हृदय रोग, फेफड़ों का कैंसर, लिवर सिरोसिस तथा निमोनिया का ज़िक्र करते हुए बताती हैं कि ये सब महिलाओं की तुलना में अमरीकी पुरुषों को लगभग दुगनी दर पर शिकार बनाते हैं।

एक शताब्दी पूर्व अमरीकी पुरुष महिलाओं से अधिक थे तथा अधिक समय तक जीवित रहते थे। लेकिन बीसवीं सदी में महिलाओं की औसत आयु बढ़ गई, क्योंकि गर्भ धारण व प्रसव कम खतरनाक हो गए हैं। अमरीका में 1946 में पहली बार महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक पाई गई थी।

इस स्थिति के ज़िम्मेदार स्वयं पुरुष हैं। वे महिलाओं की तुलना में धूम्रपान, मद्यपान तथा जीवन को खतरे में डालने वाले अधिक जोखिम उठाते हैं। महिलाओं की तुलना में पुरुषों की (अन्य पुरुषों द्वारा) अधिक हत्याएं होती हैं। उनकी आत्महत्या की दर एवं जानलेवा कार दुर्घटनाओं की दर महिलाओं की अपेक्षा अधिक होती है। पुरुष चालक एल्कोहल के कारण अकाल मृत्यु के कहीं अधिक शिकार होते हैं।

लेकिन आयु के इस अंतर को आचरण स्पष्ट नहीं करता और न ही तनाव इसका उत्तर है। यदि उम्र के छठे दशक में हृदय रोग ने अधिक पुरुषों को अपना शिकार बनाया, तो कहा गया कि कार्पोरेट विश्व के तनाव इसके लिए ज़िम्मेदार हैं। डॉक्टरों ने कहा कि जब महिलाएं घर से बाहर काम करने लगेंगी तब वे भी पुरुषों जैसी दर पर मरने लगेंगी। लेकिन सन 1950 तथा 1985 के बीच अमरीका में कामकाजी महिलाओं की संख्या लगभग दुगनी हुई। कई अध्ययनों ने सिद्ध किया कि ये कामकाजी महिलाएं घरेलू महिलाओं की तरह ही स्वस्थ हैं।

लिंग भिन्नता का अध्ययन कर रहे कुछ वैज्ञानिकों का विश्वास है कि शायद प्रकृति भी महिलाओं का ही पक्ष लेती हैं। प्रत्येक सजीव अपने गुणसूत्रों के निर्देशानुसार चलता है। मानव में 23 जोड़ी गुणसूत्र होते हैं। लेकिन नर में, इनमें से एक नाज़ुक बेमेल जोड़ी होती है, जिसमें दो गुणसूत्र एक जैसे नहीं बल्कि अलग-अलग किस्म के होते हैं। इन्हें एक्स और वाई नाम दिए गए हैं। मादाओं में इस जोड़ी में दोनों गुणसूत्र एक्स होते हैं। इसकी आनुवंशिक 'प्रोत्साहक' शक्ति, कभी कभार महिलाओं के उत्कृष्ट लचीलेपन के रूप में प्रकट होती है। अगर नर का अकेला 'एक्स' गुणसूत्र त्रुटिपूर्ण हो, तो यह संभव है कि एक गंभीर आनुवंशिक विकार प्रकट हो। उदाहरण के लिए मांसपेशियों की एक विशेष प्रकार की विकृति इसी एक 'एक्स' गुणसूत्र में खराबी के कारण होती है। महिलाओं की तुलना में पुरुषों में ये रोग ज़्यादा आम हैं।

इस अकेले 'एक्स' सिद्धांत से भी पूरी समस्या हल नहीं होती। कुछ अनुसंधानकर्ता 'वाई' नर गुणसूत्र को इस अंतर के लिए दोषी मानते हैं। इसका उत्तर हार्मोन भी हो सकते हैं। 40 वर्ष की उम्र तक सभी महिलाएं लगातार एस्ट्रोजन का उत्पादन कर रही होती हैं; इस उम्र तक एक महिला के मुकाबले तीन पुरुष हृदय रोग से मरते हैं। लेकिन इससे अधिक उम्र में महिलाओं की यह लाभकर स्थिति लगातार कम होती जाती है। दोनों लिंगों के लिए अब हृदय रोग मृत्यु का मुख्य कारण है। लेकिन पुरुषों की तुलना में महिलाओं को हृदय रोग से मृत्यु के संदर्भ में एक दशक की मोहलत मिल जाती है।

अब अगर एस्ट्रोजन ही इस कहानी का नायक है तो टेस्टोस्टेरॉन यानी नर हार्मोन शायद खलनायक। वयःसंधि तक लड़कों तथा लड़कियों में कोलेस्टेरॉल स्तर समान होता है। लेकिन जब लड़के यौवनावस्था को छूते हैं, टेस्टोस्टेरॉन निर्मित होने लगता है और उनके एचडीएल कोलेस्टेरॉल यानी 'अच्छे कोलेस्टेरॉल' का स्तर कम होने लगता है। पर लड़कियों में एचडीएल का स्तर स्थिर बना रहता है। दोनों लिंगों में एलडीएल यानी बुरे कोलेस्टेरॉल का स्तर यौवनावस्था के बाद बढ़ता है, लेकिन पुरुषों में यह बढ़ोतरी कुछ तेज़ है।

टेस्टोस्टेरॉन हार्मोन आक्रामकता को जन्म देता है और बड़ी मांसपेशियों के निर्माण में मददगार होता है। संभवतः एक समय में ये गुण मददगार रहे होंगे जब पुरुषों का मुख्य दायित्व विरोधी कबीलों से लड़ना होता था। लेकिन टेस्टोस्टेरॉन ने यह महत्त्व अब खो दिया है।

लिंगों में पाया गया प्रत्येक अंतर महिलाओं का ही पक्ष नहीं लेता। महिलाएं, पुरुषों की तुलना में, संक्रामक रोगों के प्रति कम संवेदनशील हैं जबकि वे रोज़मर्रा के रोग व दर्द के प्रति अधिक नाज़ुक हैं। चिकित्सकों को यह कहते सुना जाता है कि उनके पास दो महिला रोगियों के अनुपात में एक पुरुष रोगी आता है। महिलाएं पुरुषों की तुलना में डॉक्टर के पास अधिक चक्कर लगाती हैं, अधिक दवाइयां लेती हैं तथा अधिक दिन बिस्तर पर व्यतीत करती हैं। वे गठिया, पैरों की सूजन, मूत्राशय के संक्रमण, मस्सों, बवासीर, मासिक स्राव रोग, सिरदर्द तथा स्फीत शिरा से परेशान रहती हैं। इसी समय पुरुषों को दिल का आघात व दौरे पड़ते हैं। अतः जहां महिलाएं मात्र बीमार पड़ती हैं, वहीं पुरुष मर जाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य को देखें तो अवसाद पुरुषों की तुलना में महिलाओं में आम है। लेकिन शिज़ोफ्रेनिया बीमारी अक्सर पुरुषों को अधिक घातक रूप से प्रभावित करती है।

पत्नी की मृत्यु पर पुरुष कठिनाई से बसर करते प्रतीत होते हैं। वे अधिक उदास रहते हैं, अधिक बीमार रहते हैं तथा संभवतः अधिक मरते हैं। पुरुष इस अवस्था का सामना नहीं कर पाते, क्योंकि कई मामलों में पत्नियां ही उनकी एकमात्र अंतरंग होती हैं। विधुर हुए लोग टूट जाते हैं तथा मर जाते हैं। इसके विपरीत अकेली महिलाओं का अक्सर निकट मित्रों का एक समूह होता है, जिन पर वे विश्वास कर सकती हैं।

लेकिन व्यवहार बदल रहा है, अतः पुरुषों और महिलाओं के बीच स्वास्थ्य का अंतर किसी स्थान विशेष तक सीमित नहीं है। हाल के दशकों में महिलाओं तथा पुरुषों की जीवन अवधि के बीच का अंतर कम हुआ है। अर्थ यह नहीं है कि महिलाओं का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। बल्कि महिलाओं का स्वास्थ्य सुधर रहा है, वहीं पुरुषों का स्वास्थ्य भी तेज़ी से सुधर रहा है।

पुरुष कम धूम्रपान कर रहे हैं, कम मद्यपान कर रहे हैं तथा अच्छा खा रहे हैं। संक्रामक रोग विज्ञानी विंगार्ड कहती हैं कि अंतर इसलिए नहीं सिकुड़ रहा कि महिलाएं आज पुरुषों की तरह व्यवहार कर रही हैं, बल्कि इसलिए सिकुड़ रहा है क्योंकि पुरुष ही महिलाओं की तरह आचरण करने लगे हैं।' ***(स्रोत फीचर्स)***